आपातकाल
में
सृजन फुलवारी

पूनम (कतरियार)

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

पूनम (कतरियार)

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-130-5
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, पूनम (कतरियार)
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY P00NAM KATRIYAR

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	मैं 'भारत'	6
2.	लॉकडाउन	7
3.	भाग कोरोना	8
4.	कृतज्ञ	9
5.	शिखर	10
6.	रंग	11
7.	संघर्ष	12
8.	श्श्श चुप्प !	13
9.	छाप	14
10.	लक्ष्य	15
11.	सुकून	16
12.	दर्द	17
13.	पूस की रात	18
14.	चाहत	19
15.	लकीरें	20
16.	आशा से आसमान थमा है	21

मैं 'भारत'

सुवर्ण-खचित, अभिराम-निष्कलुष,
मेरे मस्तक पर शोभित, हिमकिरीट!
दसों दिशि प्रशंसित-स्नेहसिंक्त,
गर्वोन्नत ग्रीवा, मैं 'भारत'!
युवा-उष्ण-ऊर्जा से गुंफित,
उत्कट अभिलाषा से संचित।
गौरवपूर्ण-उपलब्धियों का प्रकाश,
अशेष विजयों का स्वर्ण-इतिहास,
सृजा मेरा स्वरुप स्वयं शिव ने,
महावीर के तप, बुद्ध के ध्यान ने।
मुझी में है अशोक-गांधी का त्याग,
मुझी में है पोरस-सुभाष की आग,
गुरु की बानी, मां टेरेसा का राग,
मेरी गोद, हुलसे है किलकारियां,
खेतों में हैं पुलकित स्वर्ण-बालियां,
हैरान संसार मेरे अध्यातम-ज्ञान से,
सुरभित विश्व मेरे केसर गंध से,
मेरे चरणों पर है सागर नत,
मेरे हुंकार से है दुश्मन पस्त,
मेरा चंद्रयान छू रहा ब्रह्मांड,
नहीं सका कोई मुझे कभी बांध,
सुवर्ण-खचित, अभिराम-निष्कलुष,
मस्तक पर शोभित हिमकिरीट,
दसों दिशि प्रशंसित-स्नेहसिक्त,
गर्वोन्नत ग्रीवा, मैं 'भारत'!

लॉकडाउन

कुनमुनाकर सूरज,
खिड़की से झांकेगा,
झटपट जगा माँ से,
टिफिन तैयार करवायेगा,
अलसाये फूलों से बच्चे,
पीठ पर लटकायें बस्तें,
भारत का भविष्य लिखने,
पढने विद्यालय जायेंगें,
मंदिरों में झांझर-करतल,
मस्जिदों से अजान,
गुरुबानी और प्रभात-फेरी,
सुरभित होगा यह जहान,
रंग-बिरंगी फल-सब्जियां,
चौक-चौराहों के ठेलों पर,
मंहगाई के चर्चे नुक्कड़ पर,
चाय सुड़क-सुड़क की जायेगी,
छोटी-छोटी कथाएं जीवन की,
फिर से सुनने में आयेगी,
वह सुबह कभी तो आयेगी!
वह सुबह कभी तो आयेगी!

भाग कोरोना

भाग कोरोना,भाग कोरोना!
दुनिया से तू भाग कोरोना!
सूप-दौरा कथरी-चदरी,
गठरी-मोटरी बांधे-लादे,
पांव-पांव चल पड़े हैं,
खेत-खलिहान वाले गांव में,
मेहनत-मजूरी छूट गई है,
भूख से हैं बिलबिलातें,
धोखें में सीमा पर आकर,
मौत के दहलीज खड़े हम,
विनती-विनय नहीं करें तुमसे,
दूरी बनाकर चल रहें हैं,
नाक-मुंह हैं हम लपेटें,
धो-धोकर हर पल हाथ अपने,
मीलों लंबे ने सफर पर,
भाग कोरोना, भाग कोरोना!
दुनिया से तू भाग कोरोना!

कृतज्ञ

खाकी वर्दी वाले योद्‌धा,
आलें-झाड़ू वालें वीर,
विकट परिस्थिति,
अवरुद्‌ध जीवन-गति,
चल रहें हवा के विपरीत,
मानवता के लिए समर्पित,
सदैव सर्वोपरि देशहित,
पलभर का प्रमाद नहीं,
क्षणभर का आराम नहीं,
झोंक दिया समस्त सुख,
दुख मोड़ सके न उनका रुख,
धरती के हैं भगवान परिचित,
धन्यवाद-आभार भी संकुचित,
घर बैठ उनकी जय करें जग,
हैं हर-पल उनका कृतज्ञ जग,
शत-शत नमन हम करतें हैं,
इनके चरणों में सिर धरतें हैं!

शिखर

सुवर्ण-खचित, हिम किरीट सा;
अभिराम-निष्कलुष; दसों दिशि में प्रशंसित,
गर्वोन्नत, मैं 'शिखर'!
तन की उष्ण-ऊर्जा;
मन की उत्कट अभिलाषा;
डगर के संघर्षों ने है गढ़ा,
स्वरुप सृजा मेरा,
महावीर के तप,
अशोक के त्याग ने,
बुद्ध के ध्यान,
गुरु के ज्ञान ने,
मारक ताने-कटाक्ष,
मुझे न भेद सके,
हां, हर एक का 'लक्ष्य' हूँ,
दंभ-अहंकार से,
रहता जरा दूर हूं,
मिलता किसी को हूं,
बड़े तकदीर से,
मेहनत-मशक्कत से, बड़े तदबीर से,
मिल जाऊं गर, कभी तुम्हारे राह में,
होकर विनीत जरा, सहेज लेना मुझे
नम्रता के आवरण से ढंक लेना मुझे!

रंग

आसमां के कुशल चितेरे,
कुछ रंग मुझ में भी भर दे,
हमारे जीवन के फलक पर,
कुछ लकीरें सुख की खींच दे,
हंसता सूरज,मुसकाता चांद हो,
कच्चा घरौंदा,फसल खड़ी हो,
उकेर दें,खुशियों से भरी आंखें,
पतीला-भर पकता भात हो,
धौरी गइया के थनों को झगड़ते,
बालक और बछड़े प्यारे हों,
रहट पर पनिहारिनियों संग,
हंसती-बतियाती लक्ष्मियां हो,
साइकिल पर विद्‌यालय जाती,
मासूम बिकसती कलियां हो,
चहुं ओर हरियाले जंगल हो,
निर्मल-पावन प्रवाहिनी हो.
शुभ्र किरणों से सजी सुबह,
हवा की ताजगी सांसों में हो,
आसमां के कुशल चितेरे,
कुछ रंग मुझ में भी भर दे!

संघर्ष

उदास-हताश निढाल रात,
सहमी-सहमी,
बिना नागा रोज़ आती है
व्याप्त हो जाती है,
इधर-उधर सर्वत्र,
समय का तकाजा देख,
उठती है धीमे-धीमे,
सहेजकर, कमजोर काया,
हांफती-खांसती, दम लगाती है,
पुरजोर लड़ती है अंधेरे से,
आखिरकार,पा जाती है,
एक लकीर रोशनी की,
चांद से छीन लेती हैं,
अधिकार अपना,
और फिर छा जाती है,
संपूर्ण अंबर में एक दिन,
उसकी सत्ता में नहीं रहता,
फिर कोई अंधकार,
नहीं, रात नहीं है मात्र,
कलुषित अंधेरे का नाम,
रात तो एक गाथा है,
सतत् संघर्ष से मिली जीत की!

श्श्श.. चुप्प!

श्श्श...चुप्प...!
अभी मन कुछ डोल रहा है,
मस्तिष्क भी कुछ बोल रहा है,
बरसों दफन था, जो दर्द सीने में
उसे आज मौन तौल रहा है!

श्श्श....चुप्प....
सांसें कुछ-कुछ चढ़ी हुई है,
बातें बहुत कुछ गड़ी हुई हैं,
घुटी -घुटी आवाज गलें में,
कब से औंधीं पड़ी हुई हैं!

श्श्श .....चुप्प......
अरे, अनल है कहीं भभका,
हां,कुछ दिख गया भीतर का,
नया सबेरा दस्तक दे रहा,
चल, खोलें द्वार हम जीवन का!

छाप

पथ पर चलते रहें
अपथ होने से बचें,
जंगल हो या झाड़ हो,
रेत हो या पहाड़ हो,
लक्ष्य जब है साध लिया,
तब,आबाद और बर्बाद क्या!
अंधेरा कितना हो घना,
सुबह से है हारा सदा,
हौसला संग-साथ ले,
कदम जब है बढ़ चलें,
तूफान भी सहम जायेंगें,
आंधियां भय खायेंगीं,
फोड़ चट्टान-पाषाण को,
छांट खरपतवार को,
कच्चा-पक्का, जो सकें
राह अपनी बना लेंगे हम .
कठोर अवनि की छाती पर,
घुंघरुओं वाले पांव के,
छाप छोड़ जायेंगें हम,
नहीं कभी हारेंगें हम,
हाँ, नहीं हारेंगें हम!

लक्ष्य

अच्छे लगतें हैं सपनें,
छोड़ रात की,
किचयायीं गलियाँ,
नहा आतें हैं जब,
भोर के शीत में.
बिछल जातें हैं,
रोमिल पत्तियों से,
झरने लगते हैं,
मृदुल हरसिंगार सा,
थके-हताश आंखों में.
अधर गुनगुना उठते हैं,
उनके अभिनंदन में गीत,
गर्म कनपटियों से होकर
उतरने लगता है जोश
बाज़ुओं में बेधड़क,
लहू करने लगते हैं
धमनियों में आलोड़न,
कसमसाने लगते हैं,
अंग-प्रत्यंग, मन-मस्तिष्क,
कि उतार लूं सपनों को नैनो के फलक में,
साकार खड़ा कर दूँ जमीन पर रुबरु,
और ललाट चुहचुहाते रहें, श्रम के सीकर-बिंदुओं से!

सुकून

टोकरें में धर सपने भर-भरकर,
मारा-फिरता कितने ही दर पर!
कितने शहर, कितने नगर छूटें,
घर छूटें, दालान छूटें!
जाने कितने अपने रुठें?
खेत-मेंड़,खलिहान छूटें!
ढूंढता है सुकून मन लंबी सड़क में,
कीच-कादों सनी, घुप्प गली में!
भोर अंधेरे को बुहारती रहती,
दूब ओस से नहाती रहती!
पलकों पर बोझ जहां मुन्ने की पेंसिल,
नींद जबर्दस्ती वहीं पसरी रहती!
फटी कथरी में प्रीत कहां पायें?
गठरी -भर थकान समेटे रहता!
ममता से गीली वहां मां की चद्दर,
पिता की उम्मीदें है बड़ी दरिद्दर!
सुकून से भर दूं बचा उनका जीवन
मिल जाय यहां जरा मुझे भी चैन!
टोकरें में धर सपने भर-भरकर,
मारा-फिरता कितने ही दर पर!

दर्द

भोर आती, आस जगाती,
घायल मन पर, मरहम लगाती,
तामील होगा, आज फैसला,
न्याय होगा, नृशंस मौत का,
रुष्ट भाग्य का, कष्ट कम होगा,
अंतहीन दुख, कुछ तो मिटेगा,
वह बलात्कार, वह अत्याचार,
बारी-बारी झेलना, वह दुराचार.
सिहरती रही आत्मा, रोती रही मरकर भी,
चीखती रही, कलपती रही अंतहीन पीड़ा, सहती रही,
हत्यारों के वे पैरोकार
कानून के वे जानकार,
कभी चाकू अपने अंग चूभा,
कभी मेरी जगह पर स्वयं आ!
आत्मा को लहुलुहान कर,
फिर न्याय की तू बात कर,
दानव-कृत्यों से मौत मिली,
हत्यारों को तो मौज मिली,
निर्भया तडपती इधर
न्याय मुंह छुपाती उधर,
वो काली पट्टी वाली देवी,
वो न्याय तौलने वाली देवी,
क्षत-विक्षत लाश थी मेरी,
अब आत्मा को न छलनी कर, अब तो मुझे न्याय दिला,
हां, उनको फांसी लटका, जल्द उनको फांसी चढ़ा!

पूस की रात

झिलमिलाते तारों वाली,
गजरों की खुश्बू में महकीं,
बांकी चितवन को उकसाती,
जर्रा-जर्रा मदहोश करती,
डोलची भर सपनें लिए,
नींद की पलकें सजाने,
लोरियों को गुनगुनाने,
श्रम से चटखतें नसों से,
प्रियतमा को रिझाने,
ठिठुर गया है चांद भी अब,
कोहरें की लिहाफ ओढ़कर,
बावला ढूंढता निरंतर वही,
स्निग्ध ज्योत्सना से सनी,
रजनी का झिलमिल आंचल,
ऐसी क्या भूल हो गई है!
ऐसी है क्या नाराजगी!
हाड़ कंपाती शीतलहर से,
रोज कहर बरपा रही हो,
रोमिल एहसासवाले परों को,
क्यों ऐसे उधेड़ रही हो?
आओ निशा रानी, आओ, फिर वही अपने रंग में,
उन्हीं जज्बातों को लेकर, फिर वही समा बांध दो!

चाहत

फिरती जिह्वा, सूखे अधर पर,
हाथ दाबते सटे पेट जब,
सपने कहां पलते नयन में,
नींद के पांव टिकते नहीं तब,
बस एक स्थिर रहती कामना,
पल-पल जवान होती कामना,
चाहे सांसें उखड़ रहीं हों,
धड़कन की धौकनी चढ़ी हुईं हो,
भूखे तन की एक ही चाहत,
चूल्हें में आग सुलगें,
देगची भर भात पके,
महक से घर महमहाये,
खुशी से सुड़ककर मांड़ पीयें,
नून-मिर्ची संग भात खायें,
भर-भर पेट, बूढ़ें-बच्चे सब!

लकीरें

तुम्हें न दया आई, न रहम,
बस खींचते चले गए तुम,
कुछ आड़ी-तिरछी,
टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें,
तुम्हारी खींची लकीरों ने,
मेरे हाथ कर दियें खुरदुरे,
काटने लगें रोड़ा-पत्थर,
इन्हीं हाथों से, राह बनाने लगे,
डालने लगें जड़ों में मट्‌ठा,
झाड़-झखारों, खर-पतवारों के,
कि, अब तो हम ही होंगे ब्रह्मा,
स्वयं के हाथों की लकीरों के,
खुद ही गढेंगे अपनी तकदीर,
अब ये हाथ खुरदुरे नहीं होंगें,
वे सशक्त होंगे, और होंगे बलिष्ठ!

आशा से आसमान थमा है

कुनमुनाकर लाल सूरज,
अंगड़ाई लेता खिड़की से
झटपट जगा जगत को,
जन को स्फूर्तिवान करेगा!
अलसाये फूलों से बच्चे,
पीठ पर लटकायें बस्तें,
भारत का भविष्य लिखने,
विद्यालय पढने जायेंगें!
मंदिरों में झांझर-करतल,
मस्जिदों अजान होगा,
प्रभात-फेरी, गुरुबानी से,
सुरभित यह जहान होगा!
रंग-बिरंगी फल-सब्जियां,
चौक-चौराहें, ठेलों पर होंगीं,
मंहगाई के चर्चे नुक्कड़ पर,
चाय सुड़क कर की जायेगीं!
इधर-उधर की रसभरी बातें,
कानों में फिर रस घोलेंगी,
रोजमर्रा की अपनी जिंदगी
पटरी पर आयेगी शीघ्र ही!
कब फूलों का खिलना मना है?
आशा से आसमान थमा है।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

विश्व और राष्ट्र की सम-सामयिक परिस्थितियों से प्रत्येक सह्दय मनुष्य का मन उद्वेलित हुआ है, चाहे कोरोना जैसी भयावह महामारी हो, या निर्भया के बलात्कारियों की सजा को विलंबित करने के लिए कानूनगो के पैंतरें और लचर कानून व्यवस्था. हालात के झंझावातों को झेलते हुए जो भाव और विचार अभिव्यक्ति पाने में सफल हुए, वे प्रस्तुत रचनाओं के कलेवर में है। विश्वास है कि निराशा-हताशा की इन स्थितियों में भी जीवन के प्रति अटूट आस्था लिए ये रचनाएं पाठकों को कुछ सोचने-समझने, सहेजने एवं स्वयं पर गर्व करने को प्रेरित करेंगी।

रचनाकार
पूनम (कतरियार)
E-mail - poonamkatriar@yahoo.com
Mobile - 9430920237

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-130-5
मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/